इन्द्रप्रस्थ अध्ययन केन्द्र, दिल्ली

एवं

नॉन-कॉलेजिएट महिला शिक्षा बोर्ड, दिल्ली विश्वविद्यालय

संस्कृत एवं प्राच्य विद्या अध्ययन संस्थान, जे. एन. यू.

हिमाचल प्रदेश केन्द्रीय विश्वविद्यालय, धर्मशाला

संस्कृत विभाग, हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय, महेन्द्रगढ़

के संयुक्त तत्वावधान में समायोजित

राष्ट्रीय संगोष्ठी

भारत मंथन – 2025

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ: राष्ट्रीय स्वत्व के जागरण के सौ वर्ष

उपविषय

सांस्कृतिक क्षेत्र में	शिक्षा के क्षेत्र में
अपनी हिन्दू संस्कृति और अस्मिता पर गौरव, सांस्कृतिक मानबिन्दुओं पर गर्व और सांस्कृतिक धरोहरों की चिंता और संरक्षण के प्रयत्नों का पिछले सौ वर्षों का इतिहास रहा है - राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का। सांस्कृतिक गौरव के विषयों पर विदेशी शक्तियों के द्वारा चलाये जा रहे षड्यंत्रों का विश्लेषण करना और उनके दुष्प्रभावों से भारतीय समाज को बचाने के प्रयासों में संघ अनवरत रूप से कार्य कर रहा है।	प्राचीन काल में विश्वगुरु के रूप में स्थापित भारत में शिक्षा की एक गौरवशाली परंपरा रही है। साम्राज्यवाद और वामपंथी षड्यंत्र के तहत शिक्षा का उपयोग हमें हमारी स्वयं की अस्मिता, स्वयं का गौरव और हमारा गौरवशाली इतिहास भुलाने के लिए किया गया। शिक्षा के क्षेत्र में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने पिछले सौ वर्षों में कई उल्लेखनीय कार्य किये हैं। शिक्षा के क्षेत्र में मैकाले की नीतियों और साम्यवादी षड्यंत्रों को उजागर करके भारतीय शिक्षा प्रणाली को पुनर्स्थापित करने की दिशा में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की एक महत्वपूर्ण भूमिका है।
सामाजिक क्षेत्र में	**राष्ट्रीय एकीकरण और राष्ट्रीय सुरक्षा के क्षेत्र में**
भारतीय समाज की परिवार केंद्रित सामाजिक व्यवस्था को विदेशी विचारकों ने हमेशा से अनुकरणीय माना है। हज़ारों वर्षों की हमारी एकात्म समाज परंपरा की संस्कृति में कालांतर में विदेशी आक्रांताओं के द्वारा तो कभी और विभिन्न सामाजिक कारणों से कई कुरीतियां पैदा होती रहीं। सामाजिक कुरीतियों और राजनीतिक चुनौतियों के प्रति राष्ट्रहित में समाज का ध्यान खींचना और उसके निवारण के लिए राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के द्वारा प्रारम्भ से ही प्रयत्न किये जाते रहे। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने सामान्य जीवनधारा एवं राष्ट्रीय आपदा-विपदाओं के काल में मानवता को केंद्र में रखकर सेवा को ही संगठन का प्रमुख "धर्म" (कर्तव्य) माना, न कि धर्म-परिवर्तन को।	राष्ट्रीय सुरक्षा की चुनौतियों की समझ बनाने का प्रयास अनवरत रूप से संघ ने किया है। विभाजन का विरोध, विभाजन हो जाने के बाद की उसकी विभीषिका से निपटने के प्रयत्न, देश के ऊपर हुए आक्रमण के समय समाज को देश हित में खड़ा रखने में संघ की एक प्रभावी भूमिका हमेशा रही है। आतंरिक और बाह्य रूप से देश के खिलाफ हो रहे षड्यंत्रों पर संघ हमेशा नज़र रखता है। इस्लामी कट्टरपंथ, नक्सल आतंक, ईसाई अलगाववाद और अन्य संदिग्ध क्रियाकलापों - विशेषकर पूर्वोत्तर राज्यों में चल रहे देशद्रोही गतिविधियों के विरुद्ध संघ हमेशा से मुखर रहा है।
विज्ञान के क्षेत्र में	**वैश्विक परिप्रेक्ष्य में**
विज्ञान के क्षेत्र में प्राचीन भारत में किये गए शोधों की हमारी उन्नत परंपरा को मध्यकाल में अपूरणीय क्षति पहुंची। उत्तम गुणवत्ता वाले धातु, उत्तम कपड़ों बनाने की जानकारी, उत्तम फसल पैदा करने का विज्ञान और खगोल शास्त्र में भारत की उन्नत समझ को उस समय पूरा विश्व मानता था। भौतिकी विज्ञान, रसायन विज्ञान, वास्तुकला विज्ञान, विमान विज्ञान, पर्यावरण संरक्षण का ज्ञान, आयुर्वेद, शल्य चिकित्सा, ज्योतिष विज्ञान और योग विज्ञान जैसे विज्ञान के कई पहलुओं में उसी उन्नत परंपरा को भारत के जन मानस में पुनर्स्थापित करने के लिए राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने निरंतर कार्य किया है।	हिन्दू राष्ट्र के मूलमंत्र - वसुधैव कुटुम्बकम् - से प्रेरित उदात्त हिन्दू विचारों के आधार पर भारत को विश्वगुरु के रूप में पुनर्स्थापित करने के संकल्पों और उसको प्राप्त करने की दिशा में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के अनवरत प्रयासों के सौ वर्ष पूरे हो रहे हैं। विश्व के पटल पर भारत - 'सर्वे भवन्तु सुखिनः' से प्रेरणा लेकर - एक समर्थ और संवेदनशील नेतृत्व देने में कितना सफल हो पाया और संघ की इसमें कैसी भूमिका रही है, विश्लेषण हेतु यह प्रश्न हम सभी के लिए एक विचारणीय बिंदु है।

राष्ट्रीय संगोष्ठी में प्रतिभा गता के लए निम्न सूचनाओं का अनुसरण करें –

- सर्वप्रथम पंजीकरण फॉर्म के लिंक पर जाकर अपना पंजीकरण करें – पंजीकरण लिंक : https://indraprasthadhyayankendra.org/bmt/registration/form
- सम्पूर्ण लेख (लगभग 3000 शब्दों तक) अंग्रेज़ी के लिए (Times New Roman) और हिन्दी के लिए (Unicode) फॉन्ट में टाइप करके निम्न ईमेल पर प्रेषित करें – ipak.bharatmanthan@gmail.com
- अर्हता – महाविद्यालय-विद्यार्थी, शोध-छात्र, अध्यापक / प्राध्यापक, अन्य प्रबुद्धजन
- शुल्क – महाविद्यालय-विद्यार्थी : 100/- रुपए शोध-छात्र : 300/- रुपए अध्यापक/ प्राध्यापक / अन्य प्रबुद्धजन : 500/- रुपए

(कृपया ध्यान दें – अपना पंजीकरण-शुल्क का भुगतान दिए गए खाते मे विभिन्न माध्यम (NEFT/IMPS/UPI)से जमा कर सकते हैं l)

Name: Indraprastha Adhyayan Kendra
Account number: 120032867538,
Bank: Canara bank,
IFSC Code: CNRB0002756
Branch : Patparganj, Delhi

SCAN & PAY

दिनांक : 26-27, अप्रैल , 2025

स्थान : रामजस महाविद्यालय, दिल्ली विश्वविद्यालय

निवेदक

विनोद शर्मा ' विवेक '	प्रो० गीता भट्ट	प्रो० ब्रजेश कुमार पाण्डेय	प्रो० सत प्रकाश बंसल	डॉ० देवेंद्र सिंह राजपूत
प्रमुख	निदेशक	रेक्टर-1	कुलपति	विभागाध्यक्ष
इन्द्रप्रस्थ अध्ययन केन्द्र	NCWEB, दिल्ली विश्वविद्यालय	जवाहरलाल नेहरु विश्वविद्यालय, दिल्ली	हिमाचल प्रदेश केन्द्रीय विश्वविद्यालय	संस्कृत विभाग, हरियाणा केंद्रीय विश्वविद्यालय

संयोजक

प्रो० राकेश कुमार पांडेय | प्रो० मनोज कुमार खन्ना | प्रो० सुनील कश्यप

सम्पर्क-सूत्र

संजय अत्रि	काजल जिंदल	राहुल मौर्य	अनूप महतो
88827 96963	99995 04948	98719 85394	85272 88433

Website: https://indraprasthadhyayankendra.org/ Email id: ipak.bharatmanthan@gmail.com

Indraprasth Adhyayan Kendra, New Delhi

in collaboration with

NonCollegiate Women's Education Board, University of Delhi

School of Sanskrit and Indic Studies, JNU

Central University of Himachal Pradesh, Dharamshala

Department of Sanskrit, Central University of Haryana, Mahendragarh

Organizes

National Conference

Bharat Manthan - 2025

Rashtriya Swayamsevak Sangh: Hundred Years of Awakening of National Identity

Subtopics

In the cultural sector

During the last hundred years, Rashtriya Swayamsevak Sangh has worked hard in awakening the feeling of Hindu pride in our civilizational roots, national symbols in our cultural traditions and kept alive the concerns for our combined cultural heritage. Sangh is continuously engaged in analysing and understanding the conspiracies being run by foreign powers to demean our cultural pride and has worked towards neutralising their efforts.

In the field of education

Bharat, that was considered as Vishva-guru in ancient era, had a rich tradition of education. This great tradition of education, suffered an onslaught during medieval period due to continuous wars by barbaric invaders . Later, under imperialism and the leftist conspiracy, education was utilised to make us forget our own identity, pride and our glorious past. In the past hundred years, Rashtriya Swayamsevak Sangh has worked in the field of education to expose this conspiracy and make amends therein through movements of Vidya Bharti, Ekal Vidyalaya, Vanvasi Shiksha and others.

In the social sector

Social thinkers of west, have always admired the family-centric social structure of Bharat. Over the course of thousands of years of our integral societal construct, many social evils have undoubtedly gripped our society - some inflicted by the foreign invaders and some due to various other social reasons. From the very beginning, Rashtriya Swayamsevak Sangh has been making efforts to draw society's attention towards all such social evils and has worked towards eliminating them in the national interest. Besides doing it on a routine basis, even in the times of national disasters and calamities, Sangh has always considered service as its main "dharma" (duty) keeping humanity at the focus and never misused this to carry out religious conversion.

In the field of national integration and security

Sangh has made continuous efforts to understand and appropriately address the challenges of national security. The Sangh had played an effective role in opposing the partition of our nation, in trying to deal with the horrors of partition and worked towards keeping the society intact and united in the interest of the country. Sangh has always kept an eye on the internal and external conspiracies, Islamic fundamentalism, Naxal terror, Christian separatism and other anti-national activities - especially in the North-eastern states, working towards disintegrating our country and has made tireless efforts to shield the nation from their impact.

In science

Our rich ancient tradition of research in the field of science suffered irreversible damage during the medieval period. India had an advanced knowledge of metallurgy, textile industry, science of producing good crops and incredible vision of astronomical events and calculations. Rashtriya Swayamsevak Sangh has been working to restore similar advanced tradition of research and studies in the field of physics, chemistry, Ayurvedic science, surgery, aerodynamics, architecture, Vastu-science, Astrology, Astronomy, Space and other sciences in the people of Bharat.

In global perspective

Taking inspiration from the Hindu Vedic mantra – Vasudhaiva Kutumbakam – Rashtriya Swayamsevak Sangh has resolved to re-establish India as a world leader and making continuous efforts towards achieving the same. How successful Bharat has been in providing a capable and sensitive leadership to the world on the pattern of – Sarve Bhavantu Sukhinah - and what role Sangh has played in this, is a point worth analysing and discussion.

Follow the following instructions to participate in the National Conference –

- **First of all register yourself by going to the link of Registration Form – Registration Link : https://indraprasthadhyayankendra.org/bmt/registration/form**
- **Send the full length article (approximately 3000 words) typed in English font (Times New Roman) or Hindi (Unicode) font at the given email id – ipak.bharatmanthan@gmail.com .**
- **Eligible Participants – College students, Research scholars, Teachers/Professors, other intellectuals**
- **Registration Fee – College students: Rs 100/- Research scholars: Rs 300/- Teachers/Professors/other intellectuals: Rs 500/-**

(Please Note – Deposit your registration fee through NEFT/IMPS/UPI, on the given Account number)

Name: Indraprastha Adhyayan Kendra
Account number: 120032867538,
Bank: Canara bank,
IFSC Code: CNRB0002756
Branch : Patparganj, Delhi

SCAN & PAY

Date : 26-27 April, 2025

Venue : Ramjas College, Univeristy of Delhi

PATRONS

Vinod Sharma 'Vivek'
Pramukha
Indraprasth Adhyayan Kendra

Prof. Geeta Bhatt
Director, NCWEB
Delhi University

Prof. Brajesh Kumar Pandey
Rector-I
School of Sanskrit and Indic Studies, JNU

Prof. Sat Prakash Bansal
Vice-Chancellor
Central University of Himachal Pradesh

Dr. Devendra Singh Rajput
Head, Dept. of Sanskrit
Central University of Haryana

ORGANIZERS

Prof. Rakesh Kumar Pandey

Prof. Manoj Kumar Khanna

Prof. Suneel Kashyap

CONTACT

Sanjay Attri 88827 96963

Kajal Jindal 99995 04948

Rahul Maurya 98719 85394

Anup Mehto 85272 88433

Website: https://indraprasthadhyayankendra.org/

Email id: ipak.bharatmanthan@gmail.com